COURSE - B.A. (Prog.) II^nd Year
SEMESTER - IV

SUBJECT - PHILOSOPHY
PAPER - WESTERN PHILOSOPHY
TOPIC - LEIBNITZ (2.1)

TEACHER - DR. MINAKSHI SINGH

Scanned with CamScanner

लाइबनीज (Leibnitz)

↓

चिदणु / चेतन अणु सिद्धांत (Theory of Monads)

↓

भूमिका

↓

द्रव्य / परिभाषा → लाइबनीज - स्वतंत्र क्रियाशक्ति से सम्पन्न विशेष पदार्थ

↓

चिदणु (चेतन + अणु)

↓

भौतिक अणु → अचेतन

↓

विस्तार

↓

विभाजन

↓

अन्य से अंतर

↓

देकार्त → द्वैतवाद ↓ (मन-शरीर)

स्पिनोजा → गुणवाद

लाइबनीज → एकतत्ववाद

②

↓

विशेषताएँ → सरल, निरवयव, अविभाज्य, पूर्वक, अक्रियाय, गतिशील, शाश्वत, इच्छण, प्रयासन, सोपान क्रमिकता, सत्तात्मकता, गवाक्षहीनता

↓

कुछ नियम

1.) सातत्य का नियम ←
2.) सादृश्यता का नियम ←
3.) अविभेद्य का नियम ←
4.) पूर्व स्थापित सामंजस्य का नियम ←
5.) शीघ्र संरक्षण का नियम ←

↓

आलोचना

Scanned with CamScanner

चिदणु सिद्धान्त (Theory of Monads) -

बुद्धिवादी दार्शनिक लाइबनीज अपने दर्शन की शुरुआत द्रव्य विचार से करते हैं और इसके द्वारा वे विश्व की सम्यक व्याख्या करते हैं। जिस सत्ता को अन्य दर्शनों ने द्रव्य कहा है उसे ही लाइबनीज ने 'चिदणु' Monad कहा है। जिसका अर्थ है चेतन अणु। लाइबनीज के पूर्व देकार्त व स्पिनोजा ने स्वतंत्रता को द्रव्य का मुख्य लक्षण माना और लाइबनीज भी इसे स्वीकार करते हैं। किन्तु लाइबनीज में स्वतंत्रता का अर्थ स्वतंत्र अस्तित्व नहीं अपितु स्वतंत्र क्रियाशीलता या शक्ति से है। अर्थात् द्रव्य वह है जो स्वतंत्र क्रिया शक्ति से सम्पन्न हो। जगत् की सारी वस्तुओं में क्रियाशीलता है इसीलिए जगत् की सारी वस्तुएँ द्रव्य हैं।

लाइबनीज के अनुसार यह चिदणु गणितीय बिन्दु एवं भौतिक के अणु से भिन्न है। गणितीय बिन्दु अमूर्त व काल्पनिक होते हैं, जबकि चिदणु काल्पनिक नहीं होते। पुनः

विस्तार के अणु भौतिक होते हैं इसलिए विभाज्य होते हैं, जबकि चिद्‌णु अविभाज्य व चेतन होते हैं। इस प्रकार लाइबनीज के अनुसार चिद्‌णु चेतन, निरवयव व अविभाज्य तत्व होते हैं और इन्हीं के द्वारा संपूर्ण सृष्टि की रचना हुई है। लाइबनीज के चिद्‌णु निरवयव और अविभाज्य होते हुए भी गणितीय बिन्दुओं के समान अमूर्त या काल्पनिक संप्रत्यय नहीं हैं। पुन: भौतिकी के अणु की तरह तात्विक (Real) होते हुए भी ये विभाज्य नहीं हैं।

देकार्त ने जहाँ विचार व विस्तार को द्रव्य माना था वहीं स्पिनोजा ने इन्हें गुण माना था, जबकि लाइबनिज के अनुसार विचार एवं विस्तार न तो द्रव्य है और न ही गुण। क्योंकि विस्तार को द्रव्य मानने पर द्रव्य में निरंतर विभाजन किया जा सकता है। जबकि द्रव्य का लक्षण अविभाज्य होता है। पुन: इन्हें गुण भी नहीं माना जा सकता क्योंकि गुण मानने पर एक ही द्रव्य में विचार एवं विस्तार जैसे एक ही गुण हो जाएंगे, जो कि उचित नहीं है।

Scanned with CamScanner

चिदणुओं (Monads) की विशेषताएं -

1) चिदणु सरल हैं। सरल होने के कारण निरवयव है। निरवयव होने के कारण अविभाज्य है और अविभाज्य होने के कारण अविनाशी है।

2) प्रत्येक चिदणु अपने आपमें पूर्ण और आत्म-निर्भर है। इसीलिए उसे पूर्णक (Entelechy) भी कहा जाता है।

3) प्रत्येक चिदणु बाह्य प्रभाव से रहित है। इस दृष्टि से चिदणु को गवाक्षहीन (Windowless) कहा गया है।

4) प्रत्येक चिदणु अपने आपमें अद्वितीय है। कोई भी दो चिदणु पूर्णतया एक समान नहीं है।

5) प्रत्येक चिदणु गतिशील है, क्योंकि वे स्वतंत्र क्रियाशक्ति से संपन्न है।

6) प्रत्येक चिदणु विश्व के समस्त अन्य चिदणुओं

को अपने भीतर, अपने ही दृष्टिकोण से प्रतिबिंबित करता है। इसी कारण चिदणु को संसार का लघुरूप माना गया है।

7.) प्रत्येक मोनड में दो प्रकार की प्रक्रियाएं पाई जाती है —

1.) प्रत्यक्ष (Perception)
2.) क्रियाशीलता (Appetition)

प्रत्यक्ष प्रत्येक चिदणु की आंतरिक आत्मवृत्ति है। जिसके द्वारा वह समस्त जगत को आत्मसात करने की क्षमता रखता है, जबकि क्रियाशीलता का अर्थ है, चिदणु का एक प्रत्यक्ष से दूसरे प्रत्यक्ष की ओर विकास करना।

8.) प्रत्येक मोनड चेतन है लेकिन सबमें चेतना की मात्रा एक समान नहीं। इनमें चेतना के न्यूनतम से उच्चतम की ओर निम्नलिखित स्तर हैं।—

Scanned with CamScanner

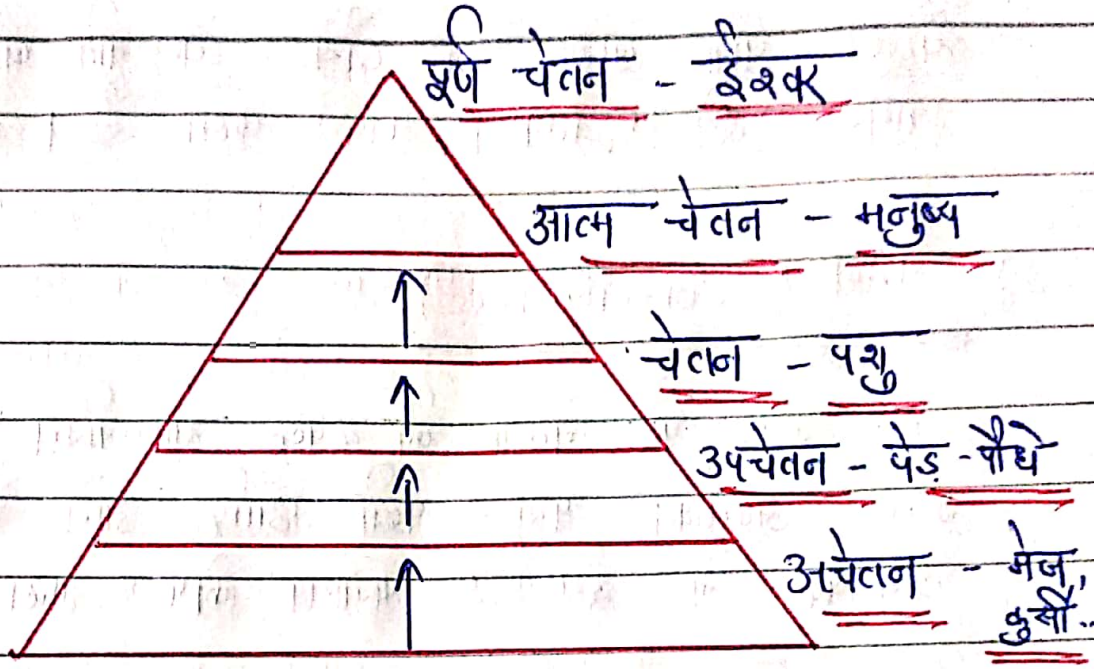

1.) अचेतन मन (Unconsciousness) -

इसमें चेतना सुषुप्त अवस्था में रहती है। यहां चेतना का अभाव नहीं होता बल्कि चेतना क्षीण रूप में विद्यमान रहती है। भौतिक प्रतीत होने वाले पदार्थ जैसे लकड़ी, मिट्टी आदि इसके अन्तर्गत आते हैं। यह उपनिषदों में वर्णित 'अन्नमय कोष' के समान है।

2.) अवचेतन (Sub - Consciousness) -

इसमें अचेतन मन की अपेक्षा अधिक मात्रा में

चैतन्य पाया जाता है। जैसे - वनस्पति जगत। उपनिषद इसे 'प्राणमय कोष' कहते हैं।

3.) चेतन (Consciousness) -

इस स्तर पर चेतना की स्पष्ट अभिव्यक्ति होती है। इसके अन्तर्गत पशु - पक्षी आदि आते हैं। उपनिषद में इसे 'मनोमय कोष' कहा गया है।

4.) स्वचेतन (Self Consciousness) -

इस श्रेणी के अन्तर्गत मानव आते हैं। इनमें इच्छात्मक उद्देश्यपूर्ण व्यवहार देखा जाता है। उपनिषद में इसे 'विज्ञानमय कोष' कहा गया है।

5.) पूर्ण चेतन (Supreme Monad) -

यह परम चिदणु है। यह परम मोनड ही लाइबनिज का ईश्वर है। लाइबनिज इसे 'मोनडों का मोनड' (Monad Monadum) कहते हैं। इसमें पूर्ण क्रियाशीलता (Actus Purus) होता है। इसमें मूलभूत तत्व (Materia Prima) की उपस्थिति

नहीं होती। उपनिषदों में इसे 'आनन्दमय कोष' कहा गया है।

सभी चिद्गुण गुणात्मक रूप से समान है क्योंकि सभी में चेतना है। यद्यपि चेतना की अलग - अलग मात्रा के कारण उनमें मात्रात्मक अंतर है।

चिद्गुणवाद (Monadology) के चार नियम -

चिद्गुणों के संबंध में लाइबनीज ने 4 नियम दिये हैं जो निम्नलिखित हैं -

1) सातत्य या निरंतरता का नियम (Law of Continuity) -

इस नियम के अनुसार चिद्गुणों के मध्य कोई अंतराल नहीं है। यह गणित के प्रभाव से निर्मित विचार है। जिस प्रकार गणित में किन्हीं भी दो संख्याओं के मध्य संख्याओं की निरन्तरता होता है, ठीक वैसे ही संपूर्ण ब्रह्माण्ड में चिद्गुणों से रहित कोई स्थान नहीं है।

Scanned with CamScanner

इसका अर्थ हुआ कि देश की धारणा वास्तविक नहीं है, चिदणुओं को ही देश कहा जाता है।

2) समानता या सादृश्यता का नियम
(Law of Similarity) -

इसके अनुसार चिदणु समान हैं। यह समानता गुणात्मक (Qualitative) दृष्टि से है क्योंकि इन सभी का गुण चेतन्य ही है।

3) असमानता या विसादृश्यता का नियम
(Law of Dissimilarity) -

इस नियम के अनुसार कोई भी दो चिदणु समान नहीं हैं। यह असमानता गुणात्मक नहीं, मात्रात्मक (Quantitative) है। चेतना की मात्रा की दृष्टि से सभी चिदणु परस्पर असमान हैं।

4) शक्ति के संरक्षण का नियम
(Law of Conservation of Energy) -

इस नियम के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी चिदणुओं

में निहित शक्ति का कुल योग हमेशा समान होता है। भौतिकी में ऊर्जा संरक्षण का सिद्धांत इससे कुछ अलग है क्योंकि उसमें गतिज (Kinetic) ऊर्जा और स्थितिज (Potential) ऊर्जा के कुल योग को समान माना जाता है, जबकि लाइबनिज की चेतन शक्ति सिर्फ गतिज ऊर्जा की धारणा पर टिकी है।

लाइबनिज के दर्शन में जड़-द्रव्य (Matter) एवं विस्तार की व्याख्या -

लाइबनिज के चिद्अणुवाद की विवेचना के क्रम में स्वभावत: यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि संपूर्ण विश्व चेतन अणुओं से बना है तो फिर जड़-पदार्थ एवं विस्तार का अनुभव क्यों होता है? लाइबनिज इसका उत्तर मूल - जड़ता (Materia Prima) और गौण - जड़ता (Materia Secunda) के आधार पर करते हैं।

लाइबनिज के अनुसार जिन्हें जड़-वस्तु कहा जाता है, वास्तव में उनमें भी अल्प मात्रा में चेतना अवश्य विद्यमान होती है और उनमें ये

दोनों प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं।

1) मूल - जड़ता (Materia Prima) -

इसके कारण मोनडों में निष्क्रियता आती है। यह वह प्रतिरोधक शक्ति है जो चिदणुओं की गति एवं शक्ति को सीमित करती है। परिणाम-स्वरूप वे अपना अधिकतम विकास नहीं कर पाते। जिन चिदणुओं में मूल- जड़ता अधिक होती है, वे जड़ प्रतीत होते हैं। इसके में मूल जड़ता नहीं होती।

2) गौण - जड़ता (Materia Secunda) -

इसका आशय समूह (Collectiveness) की प्रवृत्ति से है। जब अनेक निम्न कोटि के चिदणु एक साथ समूहों में रहते हैं, तो उन्हें प्रायः जड़- पदार्थ कह दिया जाता है।

वास्तव में वास्तविक सत्ता केवल विस्तारहित चेतन मोनडों (चिदणुओं) की है जो चेतना की मात्रा के आधार पर श्रृंखलाबद्ध हैं।

Scanned with CamScanner

केवल निम्न कोटि के परमाणुओं के आपस में संयोजन के कारण जगत में जड़-द्रव्य अर्थात विस्तार जैसा प्रतीत होता है, जबकि वास्तव में जगत में विस्तार की वास्तविक सत्ता नहीं है।

Scanned with CamScanner